॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे देव! हे सखा! हे मित्र! तू इस सँसाररूपी राष्ट्र का स्वामी है। इस राष्ट्र को शान्तिदायक, महान् और ऊँचा बना। विधाता! यही नहीं, हम सँसाररूपी राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं। हम सबसे पूर्व यह चाहते हैं कि जो हमारा हृदयरूपी राष्ट्र है यह हर प्रकार से ऊँचा बना रहे। यह हमारी हृदयरूपी जो अयोध्या है इसमें वह राम विराजमान रहें, जिस रामराज्य के ऊपर सँसार व्याकुल होता चला जा रहा है। हे विधाता! आज हम शरीर में वह अयोध्या चाहते हैं जिसमें रामराज्य हो जाए। हमारी यह अयोध्यारूपी नगरी ऊँचा बन जाए और वह विधाता, इस नगरी में ओत-प्रोत हो जाए। वह विधाता, इस राष्ट्र का स्वामी बन जाए।

हे विधाता! आज हम उस राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं। जिस राष्ट्र में हमारा जन्म हो, जो राष्ट्र हमारे शरीर का एक ऊँचा भाग हो। कैसे बनाएँगे, विधाता? जब तक आपकी करूणा नहीं होगी, विधाता! आपकी दी हुई प्रेरणा हमें नहीं मिलेगी। तब तक हम इस सँसार का, अपने शरीर रूपी राष्ट्र का उत्थान किसी भी प्रकार नहीं कर सकते, न ही इसका निर्माण अच्छी प्रकार कर सकते हैं।

प्रभु! हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते, सँसार का कल्याण चाहते हैं। जब सँसार में रहने वाले प्राणियों का हृदय, अयोध्या के तुल्य बन जाएगा, रामराज्य सबके हृदय में रमण कर जाएगा। उस काल में शान्ति का प्रदर्शन हो जाएगा।

विधाता! आज हम भी अपना प्रदर्शन कर रहे हैं। हम भी अशान्ति में हैं। हमें शान्ति नहीं मिल रही है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 560 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 635
वर्ष : 47 44 समग्र वर्ष : 53

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. संसार क्या है?	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-17
4. राष्ट्र उत्थान हेतु महानन्द जी के उद्गार	पूज्यपाद-गुरुदेव व महर्षि महानन्द जी	18-35
5. ऋषियों के उद्गार		36
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		37-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) **PAN No. – AAAAV7866J**

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

।। ओ३म् ।।

संसार क्या है?

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। वह संसार का नियन्ता है अथवा निर्माण करने वाला है। हमारे यहाँ उस परमपिता परमात्मा की अनन्तमयी महिमा का गुणगान गाया जाता है। प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गाता रहता है उसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन करता रहता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं। यह जो जड़-जगत और चेतन जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, चाहे वह चेतना के किसी भी रूप में विद्यमान हो, वह जड़वत किसी रूप में विद्यमान हो, जिस भी काल में मानव ने दोनों प्रकार के जड़वत व चेतनवत के ऊपर विचार-विनिमय किया है उसी के मूल में वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं।

मानव की भावना

बहुत समय हुआ जब ऋषि-मुनियों के काल और विज्ञानवेत्ताओं के मध्य में उस परमपिता परमात्मा के जगत के ऊपर अनुसन्धान होता रहा। बहुत पुरातन काल हुआ जब ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान होकर के यह चिन्तन करने लगे कि यह संसार जो अपना क्रियाकलाप कर

रहा है और यह नाना प्रकार की आभा में निहित हो रहा है इसके मूल में क्या है? ऋषि-मुनियों ने एक वाक्य कहा है कि मानव अनुष्ठान कर रहा है अथवा परमात्मा की महिमा का गुणगान गाने लगा है परन्तु यह सर्वत्र की भावना मानव के हृदय में रहती है, प्रत्येक प्राणी के हृदय में यह भावना रहती है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। मैं प्रकाश के आङ्गन में जाना चाहता हूँ और प्रकाश में रत्त होना चाहता हूँ, मैं अन्धकार नहीं चाहता हूँ। मेरी प्यारी माता अपने पुत्र के ऊर्ध्वा में कल्पना करती रहती है और उसके हृदय में एक ही कामना रहती है कि मेरा पुत्र मृत्यु को न प्राप्त हो जाए, वह सदैव प्रकाश में रहने वाला हो। तो विचार आता है कि मृत्यु जो शब्द मानव के समीप आता रहता है, प्रत्येक अपनी आभा में नियुक्त हो करके चिन्तन कर रहा है परन्तु जब वैदिक वाणी में प्रवेश करते हैं या दार्शनिकों की सभाएँ हुआ करती हैं तो विचारा जाता है कि यह संसार क्या है। प्रत्येक मानव संसार के सम्बन्ध में विचारता रहता है। यह संसार अपने में निहित रहने वाला है।

यह संसार एक कल्प वृक्ष है

विचारा गया कि यह संसार अपनी-अपनी कल्पना के आधार पर कल्पना ही करता रहता है। जिस काल में दार्शनिक अपनी आभा में नियुक्त हुए और दार्शनिकों ने संसार के ऊपर कल्पना करना प्रारम्भ किया तो यह विचार आता है कि यह संसार क्या है? सबसे प्रथम दार्शनिक कहता है कि यह संसार तो एक कल्पवृक्ष की भाँति हैं यहाँ मानव कल्पना करता है और वस्तु प्राप्त हो जाती है। तो यह संसार कल्पवृक्ष की भाँति माना है। मुझे वह गाथा स्मरण आती रहती है जो अलङ्कारिक रूप में प्रगट की गई है। एक समय कहीं एक मानव बड़ा दुखित हो रहा था। और वह दुखित क्यों था कि उसकी पत्नी उसे नित्य प्रति दण्डित किया करती थी और वह मानव बड़ा दुखित हो रहा था। एक समय प्रातःकालीन पत्नी ने उसे दण्डित किया और वह मानव

व्याकुल हो रहा था और वह कह रहा था, प्रभु से प्रार्थना कर रहा था, हे प्रभु! मुझे आप यहाँ से ले जाइए। मैं इस संसार में अपने जीवन को नहीं चाहता हूँ। इतने में कहीं से भ्रमण करते हुए देव ऋषि नारद मुनि आ गए और वह बोले, चलो भगवन् आज मैं तुम्हें स्वर्ग लोक में ले चलूँ। मानव ने कहा प्रभु आप कौन है? उन्होंने कहा कि मैं देव ऋषि नारद हूँ। उसने कहा कि भगवन् मैं तो यह प्रार्थना ही कर रहा था। देव ऋषि नारद और वह मानव भ्रमण करते हुए कल्पवृक्ष के नीचे विराजमान हो गए। उन्होंने कहा कि हे मानव यह विष्णु की आभा है। यह उसके द्वार पर कल्पवृक्ष है तो कल्पवृक्ष के ही नीचे विराजमान हो जाओ। मैं भगवान् विष्णु की आज्ञा ले आऊँ कि तुम स्वर्ग में जाने योग्य हो अथवा नहीं। देव ऋषि नारद मुनि तो स्वर्ग में चले गए और वह मानव कल्पवृक्ष के नीचे विद्यमान हो गया। वहाँ मन्द सुगन्ध वायु चल रही थी वह मानव उससे प्रभावित हो गया और मानव ने कहा यह तो बड़ी मन्द सुगन्ध वायु है और उसने कल्पना की कि मेरे लिए यहाँ एक आसन होना चाहिए था। उसने कल्पना ही की तो आसन लग गया। तो वह मानव उससे अधिक प्रभावित हुआ। उसने और कल्पना की कि यहाँ विश्राम करने वाला आसन भी होना चाहिए। वहाँ विश्राम करने वाला आसन भी लग गया। वह तो कल्पवृक्ष था कल्पना करते ही वह वस्तु प्राप्त हो जानी थी। देव ऋषि नारद भगवान् विष्णु के द्वार बैठे थे उस मानव ने पुनः कल्पना की यहाँ सेवा करने वाली अप्सराएँ भी होनी चाहिए। कल्पना करते ही अप्सराएँ भी आ गईं। अब सेवा होने लगी। वह मानव बड़ा प्रभावित हुआ। उस मानव के हृदय में यह कल्पना जागने लगी कि तेरी मृत लोक वाली पत्नी होती तो तेरे ऊपर वह डन्डा भी होता। इतने में वह पत्नी भी वहाँ आ गई। आगे वह मानव है पश्चात् उसकी पत्नी, डण्डे सहित खिलवाड़ हो रहा है। जब देव ऋषि नारद मुनि भगवान् विष्णु के द्वार से कल्पवृक्ष के नीचे आने लगें तो

उन्होंने दृष्टिपात किया और मानव को देखा कि वह तीव्र गति से जा रहा है और पत्नी उसके पश्चात् निसन्देह गई। नारद मुनि ने दिव्य वाणी से कहा, अरे मानव! कल्पना को त्याग, और उसने कल्पना को त्यागा। न तो पत्नी है, न अप्सराएँ हैं, न आसन है। उस कल्पवृक्ष के नीचे वह मानव विराजमान है। देव ऋषि नारद मुनि बोले अरे धूर्त, तू ने यहाँ कल्पवृक्ष के नीचे विराजमान होकर भी भोग विलासों की कल्पना की है। यहीं स्वर्ग की कल्पना करता तुम्हें स्वर्ग मिल जाता। **यह भोग विलासों की कल्पना वाला जगत नहीं है, यह तो कर्त्तव्य के लिए बाध्य कर रहा है।** देव ऋषि नारद मुनि ने कहा कि यहाँ तो मैंने तुम्हें इसलिए विद्यमान किया था कि तू स्वर्ग की कल्पना करेगा। अरे! कल्पवृक्ष के नीचे आकर जो मानव तू स्वर्ग की कल्पना करता तो तुम्हें स्वर्ग प्राप्त होता। अरे! भगवान् से मिलने की कल्पना करते तो तुम्हें भगवान् का मिलन हो जाता। **यह जो परमात्मा का उत्पन्न किया जगत है यह एक प्रकार का कल्पवृक्ष है। जो मानव जैसी कल्पना करता है उसे वैसा ही प्राप्त होता है।**

वेद के आचार्यों ने यह कहा कि मानव! तुझे तो कल्पना करनी ही है, तो ऊर्ध्वा में कल्पना कर। तू विलासों की कल्पना मत कर, तू महानता की कल्पना कर, कर्त्तव्यवाद की कल्पना कर, यहाँ घृणित वाद की कल्पना मत कर। यह संसार क्या है? तो प्रथम दार्शनिक कहता है कि यह संसार कल्पवृक्ष है। यहाँ कल्पना की जाती है, यहाँ ब्रह्माण्ड में ऊर्ध्वा की रचना होती रहती है। एक वैज्ञानिक है वह अपने में विज्ञान की कल्पना कर रहा है। मानो विज्ञान के आङ्गन में प्रवेश हो रहा है। यहाँ संसार में प्रत्येक मानव नवीन-नवीन कल्पना करता रहता है। तो ऋषि कहता है कि यह संसार तो कल्पवृक्ष है। **इस में मानव जैसी कल्पना करता है वैसा ही बन जाता है।** दार्शनिक यह उद्गीत गाकर मौन हो गया।

संसार एक व्यापारशाला है

द्वितीय दार्शनिक कहता है कि नहीं यह संसार कल्पवृक्ष भी होगा परन्तु मुझे यह संसार एक प्रकार की व्यापारशाला दृष्टिपात आती है। यहाँ प्रत्येक मानव व्यापार करने के लिए आया है, व्यवसाय करने के लिए आया है। यहाँ किसी का किसी पर कुछ है वह मानव देने के लिए आया है और किसी का कुछ है तो लेने के लिए आया है। यह संसार एक प्रकार का व्यापार है। एक प्रकार का व्यवसाय है। प्रत्येक मानव कल्पना करता है। यह देने लेने की व्यापारशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव मेरी प्यारी माता का पुत्र है। माता के गर्भ से उसने जन्म लिया है। वह मानव शिशु बन करके माता के गर्भस्थल में आया है। देखो जब शिशु बन के आया तो माता के गर्भस्थल में विद्यमान जब हुआ तो वह बिन्दु, बिन्दु के रूप में शिशु बनके आया, जब शिशु विद्यमान हुआ तो सर्वत्र देवताओं की एक माला बन गयी थी। उस काल में मेरी माता नहीं जानती थी कि तेरे गर्भस्थल में कौन शिशु का निर्माण कर रहा है, परन्तु देखो एक माला बन गई है और वह माला कैसे बनी पृथ्वी गुरुत्व देने लगी, चन्द्रमा अमृत देने लगा, सूर्य ने प्रकाश दिया, अग्नि ने ऊष्ण बनाया। अब वह आसन और भोजन बन गया था। इसलिए यजमान यज्ञशाला में तीन आचमन करता है क्योंकि माता के गर्भ में वह बालक पनप रहा था तो जल तो उसका आसन बना जल ओढ़न बन गया तो जल पासे बन गए, तो वह पनप रहा था और वह आपोमयी ज्योति कहलाती है। अग्नि उसे ऊष्ण बनाने वाली है।

विचार क्या सूर्य प्रकाश, चन्द्रमा अमृत और अग्नि ज्योति बन के रहती है। वही तो बालक का गृह बना हुआ है। वायु प्राण दे रहा है। अन्तरिक्ष आकाश दे रहा है। माता की नाभि के द्वारा अमृतमयी नाड़ी के द्वारा अमृत को पान कर रहा है। भोली माता! तुझे यह प्रतीत नहीं है कि वह निर्माण कर रहा है और वह निर्माणवेत्ता है, वह अमृतमयी

कर रहा है। विचार क्या वेद का ऋषि कहता है कि यह संसार व्यापारशाला है। माता के गर्भस्थल में उसने अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया है। माता कह रहा है वह माता कहने वाला उच्चारण करने वाला ही है। **अपने में आत्मा में ही समाहित हो रहा है।** न्यूनता से पूर्णता का जन्म हो रहा है। वाह रे प्रभु! तू कितना वैज्ञानिक है। आज मैं तेरे विज्ञान की सीमा में जाने वाला नहीं हूँ क्योंकि तू विज्ञान में गति करने वाला है। यह संसार व्यापारशाला में मानव एक-दूसरे के व्यवसाय में लगा हुआ है। माता का पुत्र माता से कुछ लेने के लिए आया है और कुछ समय के पश्चात् चला जाता है।

बेटा! मुझे एक वाक्य स्मरण आ गया है। एक महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज हुए। वह भयङ्कर वन में रहते थे, वह वायु गोत्रीय कहलाते थे। उनकी पत्नी उद्दालक गोत्र में जन्म लेकर के उनका वायु गोत्र में गृह संस्कार हुया। कुक्कुट मुनि महाराज बड़े तपस्वी थे। अपने में तपस्या करते रहते थे। माता, उनकी पत्नी के गर्भ में शिशु का प्रवेश हुआ। जब चर्तुथ मास हो गए। एक समय उनकी पत्नी ने कहा भगवन्! हे वायु गोत्रीय ब्रह्म! मैं यह जानना चाहती हूँ कि मेरे गर्भस्थल में जो शिशु पनप रहा है, उसका बाहरीय जगत में हमसे इसका क्या समन्वय है। देवी के इन वाक्यों को शान्त करके ऋषि बोले हे देवी! मैं इसका उत्तर कल दूँगा। वह एक नदी के तट पर विद्यमान होकर के समाधिष्ट हो गए, समाधिष्ट होकर के माता के गर्भस्थल में जो आत्मा विद्यमान थी शिशु के रूप में वह अपने वाक्य को प्रगट करने लगे। उन्होंने कहा हे आत्मा! तू हमारे कुल में प्रवेश हो रहा है, तेरे आने का मन्तव्य क्या है? तो आत्मा उत्तर देता है कि मैं इससे पूर्व जन्मों में राजा था और राजा होकर मेरा कुछ ऋण तुम पर रह गया, इसलिए मैं व्यापारशाला में आ रहा हूँ, संसार में आ रहा हूँ और द्रव्य को लेकर मैं यहाँ से चला जाऊँगा।

वह ऋषि यह वाक्य श्रवण करके अपने देवी से बोले कि हम तो बड़े दुर्भागी हैं। उन्होंने कहा कि क्यों? उन्होंने कहा कि **हमारे यहाँ दर्शनकारों ने कहा है कि पिता से पहले पुत्र का निधन नहीं होना चाहिए।** परन्तु यह जो तुम्हारे गर्भ से जन्म लेगा, हमसे पूर्व इसका निधन हो जाएगा। देवी ने कहा प्रभु! ऐसा क्यों? उन्होंने कहा देवी कि इससे पूर्व काल में सुदर्शन नाम के राजा थे और वह राजा होने से तुम मेरी पत्नी थी। यह (ऋण) लेने के लिए आया है। देवी ने कहा कोई बात नहीं भगवन्! कुछ समय के पश्चात् उस आत्मा का जन्म हुआ। पुत्र के रूप में प्रगट हुआ और आनन्दवत् होने लगा। कुछ समय के पश्चात् वह रुग्णता में परणित हो गया जब रुग्णता में परणित हो गया तो देवी के द्वारा जो मुद्राएँ थीं वह समाप्त हो गयीं। जितनी मुद्राएँ उसकी थीं जब समाप्त हो गयीं तो उसका प्राणान्त हो गया। परिणाम, ऋषि ने यह कहा कि यह संसार एक प्रकार की व्यापारशाला है। यहाँ किसी का देना है तो किसी का लेना है।

यह संसार एक विज्ञानशाला है

जब ऋषि ने अपने में निर्णय दिया तो अपने में व्यापारशाला कह करके लेने देने की व्यापारशाला उद्गीत गा करके वह मौन हो गए, उनका वाक्य समाप्त हो गया कि यह संसार एक प्रकार की व्यापारशाला है। किसी ने कहा यह संसार एक प्रकार का कल्पवृक्ष है। तो तीसरा वैज्ञानिक कहता है नहीं, यह संसार व्यापारशाला भी होगा परन्तु मुझे यह संसार एक प्रकार की विज्ञानशाला के रूप में दृष्टिपात आता है। यहाँ प्रत्येक मानव वैज्ञानिक बनने के लिए आया है। यह विज्ञानशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव विज्ञान में रत्त होना चाहता है, विज्ञान की ऊँची-ऊँची उड़ानें होने लगी और विज्ञान यह कहता है कि एक परमाणु दूसरे परमाणु का मिलान करता है। और वे परमाणु एक-दूसरे से गठित होकर यन्त्रों का निर्माण करना है। यहाँ परमाणु का

निर्माण होता रहता है और निर्माण हो करके विशाल अग्नि प्रचण्ड होती रहती है। यह संसार एक प्रकार की विज्ञानशाला है। यहाँ संसार में जो आया और वह विज्ञान के लिए तत्पर हो जाता है। कृषक भी विज्ञान में रत्त हो करके अन्न की उपज करना चाहता है। इसी प्रकार नाना प्रकार के उपकरणों के द्वारा अनाज करना चाहता है। राष्ट्र अपने विज्ञान व वैज्ञानिकों की घोषणा कर रहा है कि वैज्ञानिकों! तुम विज्ञान में रत्त हो जाओ, विज्ञानवेत्ता बनों। मेरे प्यारे, माता कहती है हे बालक! तुम अपने क्रियाकलापों में परणित हो जाओ, तो मेरे प्यारे! वे कहीं सूर्य से उपकरण लेते हैं, कहीं से कान्ति लेते हैं, कहीं तारामण्डलों की माला बनाने लगते हैं, तो कहीं संसार विज्ञानशाला के रूप में दृष्टिपात आने लगता है, वे कहते रहते हैं कि यह संसार एक-दूसरे में विज्ञान में रत्त होता है। विज्ञान कहते किसे हैं? **विज्ञान कहते हैं सूक्ष्म धाराओं का एकोकीकरण करने का नाम विज्ञान कहलाता है।** विज्ञान किसे कहते हैं? **जहाँ मानव अपनी वाणी में अपने चित्र का दर्शन करता है।** विज्ञान किसे कहते हैं? **जहाँ मानव अन्तरिक्ष में विराजमान हो करके यन्त्रों का दर्शन करता है।**

षटाङ्गकेतु मुनि द्वारा यन्त्रों में पचासवें महापिता तक के दर्शन

मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन किया है कि यह विज्ञान कैसा है। विज्ञानशाला में विद्यमान हो करके अपने पूर्वजों का दर्शन करता है। मुझे स्मरण आता रहता है षटाङ्गकेतु मुनि महाराज का जीवन षटाङ्गकेतु मुनि महाराज उद्दालक गोत्रीय कहलाते थे। उद्दालक गोत्र में बहुत से वंशज हो गए हैं, परन्तु उनमें एक महर्षि षटाङ्गकेतु मुनि हो गए हैं। उनकी पत्नी का नाम रेणुका था। रेणुका ने कहा, प्रभु मैं बाल्यकाल में अपने पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा अध्ययन करती रही हूँ, और मेरी हार्दिक कामना है कि हमें विज्ञान में जाना चाहिए। वैज्ञानिक बनना चाहिए। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम! वैज्ञानिक तो हमें बनना ही चाहिए।

षटाङ्गकेतु मुनि महाराज और उनकी पत्नी नित प्रति याग करते थे। साकल्य एकत्र करना और घृत के द्वारा याग करना और उनमें जो तरङ्गें उत्पन्न हुआ करती थीं। याग के द्वारा तरङ्गों को एकत्रित करके उनमें वे विज्ञान का दर्शन करते थे। विज्ञान का जब दर्शन करने लगे तो विज्ञानता का दर्शन हुआ 'विज्ञानाँ ब्रह्मा दर्शनं' तरङ्गों में जैसे हमारे यहाँ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने क्या मैत्रियी ने भी यह कहा था कि महाराज एक यजमान याग कर रहा है। इस यज्ञ में यज्ञ की आत्मा क्या है, जब यज्ञ की आत्मा का प्रसङ्ग आया तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि **यज्ञ की आत्मा स्वाहा है।** जो यजमान होताजन विद्यमान होकर के स्वाहा उच्चारण करते हैं वह यज्ञ की आत्मा कहलाता है। परन्तु ऋषि-मुनि ऐसे ही नहीं किसी वाक्य का उच्चारण करते थे, चिन्तन करते रहते थे कि स्वाहा यज्ञ की आत्मा कैसे बनता है। वे, महर्षि षटाङ्गकेतु व उनकी पत्नी यह विचारते रहते थे कि महाराज वेद ने यह कहा है कि यज्ञ की आत्मा स्वाहा है। मैं नहीं जानती यह कैसे स्वाहा बन सकता है। उन्होंने कहा हे देवी! वेद मन्त्रों से स्वाहा उच्चारण किया जाता है। वह यज्ञ की आत्मा है, जैसे हम स्वाहा उच्चारण करते हैं तो हमारे स्वाहा कहते ही अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके वह जो स्वाहा शब्द द्यौलोक को जाता है। उस स्वाहा शब्द में हमारा चित्र, हमारा शब्द विद्यमान रहता है। जब उन्होंने यह कहा कि शब्द विद्यमान है तो उनकी पत्नी ने कहा कि इसके आगे चलकर हमें दिग्दर्शन करना है। उन्होंने कहा देवी हम दिग्दर्शन करेंगे। जब अनुसन्धान करने लगे तो उन्होंने यन्त्रों का निर्माण किया और यन्त्रों का निर्माण करने के पश्चात् उनके यन्त्रों में उनके चित्र दृष्टिपात आने लगे। जब उनके चित्र आने लगे तो उन्होंने कहा कि हे भगवन्! पत्नी बोली, हे प्रभु! हमारे तो चित्र आ रहे हैं इस यन्त्र में। उन्होंने कहा, हे देवी! 'यथा ब्रह्मः वृतं'। उन्होंने यह वाक् कहा तो वेद का ऋषि निर्णय करने लगा, अनुसन्धान करने

लगा। तो ऐसे-ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया कि उन्हें अपने छठे महापिता का दर्शन होने लगा। जो पिता संसार में नहीं थे तो उनके चित्र अन्तरिक्ष में गति कर रहे थे। यन्त्रों में उनके चित्र आने लगे, शब्द आने लगे, क्रियाकलाप आने लगे। मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि षटाङ्गकेतु मुनि के विद्यालय में, षटाङ्गकेतु मुनि की यज्ञशाला में उनके यहाँ पचासवें महापिता तक के दर्शन होते थे।

षटाङ्गकेतु मुनि व पत्नी श्रेय का लोक-लोकान्तरों में गमन

विचार क्या, वेद का ऋषि कहता है कि यह संसार एक प्रकार की विज्ञानशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव वैज्ञानिक बनने के लिए आया है। मेरी प्यारी माता जब प्रातःकालीन तर्पण करती है, यज्ञ में स्वाहा देती है तो वह स्वाहा ही तो यज्ञ की आत्मा है। वह आत्मा बन करके याग को अन्तरिक्ष में ले जाता है। मैं विशेष वाक्य तो नहीं दे पाऊँगा केवल यह विचार देने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक मानव को यह विचार-विनिमय करना है कि यह संसार क्या है? यह एक प्रकार की विज्ञानशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव वैज्ञानिक बनने के लिए आया है, यहाँ विज्ञानशाला में हम सब विद्यमान हैं। यह परमात्मा का जगत एक प्रकार की विज्ञानशाला है। जब ऋषि ने यह वाक्य प्रगट किया, तो उन्होंने कहा कि यहाँ प्रत्येक मानव अपने आपको वैज्ञानिक बन करके अपने में अपनेपन को दृष्टिपात करता रहा है। तो षटाङ्गकेतु मुनि महाराज ने विज्ञान को यहीं तक नहीं जाना था। मुझे वेद मन्त्र स्मरण आया है और वह वेद मन्त्रों द्वारा याग कर रहे थे। वह कहते थे 'ऊर्ध्वा ब्रह्मः' एवं 'लोकां व्रतं देवी ब्रह्महः' वह उच्चारण कर रहे थे हे देवी! वेद मन्त्र यह कह रहा है कि हम लोक-लोकान्तरों में भी गमन कर सकते हैं। उन्होंने कहा प्रभु हमें उस विज्ञान के आङ्गन में प्रवेश करना चाहिए। उन्होंने एक समय, बहुत समय के पश्चात्, एक यन्त्र का निर्माण किया था और यन्त्र में उन्होंने कहा कि हे देवी! आओ आज हम लोकों का भ्रमण करके आते हैं। उन्होंने कहा,

बहुत प्रियतम। महर्षि षटाङ्गकेतु, उनकी पत्नी श्रेय और एक ब्रह्मचारी वीरेन्द्रकेतु तीनों यान में विद्यमान हो गए और विद्यमान हो करके वहाँ से जिस यन्त्र को उन्होंने जाना वह यन्त्र सूर्य की ऊर्ध्वा में गति करने लगा। तो सबसे प्रथम पृथ्वी से उड़ान उड़ता हुआ वह सबसे प्रथम चन्द्रमा में जा पहुँचा। चंद्रमा से उड़ान उडता हुआ वह यान बुध में चला गया। जब बुध से उड़ान उड़ी तो मङ्गल में चला गया। मङ्गल से उड़ान उड़ी तो वह शुक्र में प्रवेश कर गया। जब शुक्र से उड़ान उड़ी तो वह मृचीका मण्डल में चला गया। जब मृचीका मण्डल से उड़ान उड़ी तो वह रोहिणीकेतु मण्डल में चला गया। जब रोहिणीकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो वह कृतिका मण्डल में चला गया। जब कृतिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो वह महीकेतु मण्डल में चला गया। वहाँ से वह मृचीका में प्रवेश कर गया। जब मृचीका से उड़ान उड़ी तो वह श्वेतकेतु मण्डल में चला गया। वहाँ से वह अरुन्धती मण्डल में चला गया। वहाँ से वह वशिष्ठ मण्डल में चला गया। वहाँ से वह रेवाचुक मण्डल में चला गया। वहाँ से वह (बृचगाथुन) मेघ मण्डल में चला गया। मैं यह विचार देने के लिए आया हूँ कि वह यान लोकों का भ्रमण करके पुनः पृथ्वी पर आ गया। मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा कि संसार एक विज्ञानशाला है, यहाँ प्रत्येक मानव वैज्ञानिक बनने के लिए आया है। मेरी पुत्री अपने विज्ञान में सार्थक बन जाती है।

वैज्ञानिक शबरी

मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया। मैं विज्ञान की कहाँ तक चर्चा करूँ। त्रेता के काल में महर्षि पप्पेतु मुनि महाराज की कन्या शबरी थी, वह **शबरी भारद्वाज मुनि के यहाँ विज्ञान में परायण हुई।** उसी विज्ञान में वह विज्ञानवेत्ता थी। उन्होंने भारद्वाज के विज्ञानशाला में उपकरणों के द्वारा, यन्त्रों के द्वारा एक यन्त्रशाला में एक यन्त्र का निर्माण किया। उस यन्त्र में यह विशेषता थी कि एक रक्त का बिन्दु प्रवेश किया और उस यन्त्र में जिस मानव के रक्त का बिन्दु था उस

मानव का स्वरूप दृष्टिपात आने लगा। वह शबरी उपकरणों व यन्त्रों के द्वारा विज्ञानवेत्ता बन गई। **यह वही शबरी थी जब राम वन को जाकर के रावण को विजय करने के लिए चले तो भारद्वाज मुनि ने सर्वयन्त्रों को उन्हें प्रदान किया था और यह कहा था कि तुम यह राम को प्रदान कर देना।** और वह यन्त्रों को लेकर पहुँच गई। मैं विज्ञान की कहा तक चर्चा करता रहूँ। मेरा तो मन्तव्य केवल यह कहता है कि यह संसार एक प्रकार की विज्ञानशाला है और यह विज्ञान में रत्त रहने वाला है। परन्तु **अन्त में ऋषियों ने एक वाक्य कहा कि इस संसार को मानव जिस दृष्टि से मापने लगता है तो इसी प्रकार का दृष्टिपात होने लगता है।**

मेरे प्यारे! कल्पवृक्ष वालों ने कल्पवृक्ष माना। व्यापारशाला वालों ने व्यापार में सिद्ध कर दिया और विज्ञानवेत्ताओं ने बेटा! विज्ञान में सिद्ध कर दिया। विचार-विनिमय क्या बेटा! यहाँ प्रत्येक मानव विज्ञानवेत्ता बनने के लिए आया है। मैं षटाङ्गकेतु मुनि की चर्चा कर रहा था। वह उद्दालक गोत्रीय थे। उद्दालक गोत्र होने के नौ सौ सत्तर (977) वंशज समाप्त हो गए थे। उद्दालक गोत्र का निकास वायु गोत्रों से हुआ था, और वायु गोत्र पचहत्तर हजार पाँच सौ इकसठ (75,561) वंशज समाप्त हो गए। वायु गोत्रों का जो निकास था वह हरितत गोत्रों से हुआ जिनके चवालीस हजार पाँच सौ पचहत्तर (44,575) वंशज तक गोत्र चले थे। हरितत गोत्रों का निकास ब्रह्मः के पुत्र कहलाते थे। जिनके लगभग इक्यानवे हजार पाँच सौ इकसठ (91,561) उनके वंशज समाप्त हुए। मैं वंशजों में जाना नहीं चाहता हूँ। यह एक प्रकरण आ गया। परन्तु विचार यह जो प्रकरण है, आज मैं इसमें जाना नहीं चाहता हूँ। विचार क्या, सदा आध्यात्मिकवेत्ता, ब्रह्मवेत्ता विज्ञान में रत्त होते चले जा रहे हैं। यह है आज का वाक्। मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें आगे की शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा।

बेटा! यह संसार विज्ञानशालामय है। विज्ञान के सम्बन्ध में और चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। **आज का वाक्य केवल यह** जिन्होंने जिस प्रकार संसार को, परमात्मा के जगत को मापने का प्रयास किया है वह आभामय दृष्टिपात आता रहा है। बेटा! यह है आज का वाक्य, यह अब समाप्त होने जा रहा है। आगे किस-किस रूप में इस संसार को दार्शनिक किस रूप में स्वीकार करते हैं, यह चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक्य समाप्त और वेदों का पठन-पाठन।

वेद पाठ .....

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्! आज्ञा।
पूज्यपाद गुरुदेव–ओ३म् शान्तिः।

दिनाँक : 13 दिसम्बर, 1986
समय : दोपहर 2 बजे
स्थान : नङ्गला मूसा (मोदीनगर)

सूचना

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज द्वारा संस्थापित वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी) दिल्ली को दानदाताओं द्वारा दान देने पर आयकर विभाग की धारा 80 जी के अन्तर्गत छूट 26-9-2914 को मिल गई है जो कि 2015-2016 से लागू है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

राष्ट्रोत्थान हेतु महानन्द जी के उद्‌गार

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस महान मेरे प्रभु की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वह जो मेरा अनुपम देव है वह यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन करता रहता है।

नाना यागों की प्रतिभा

आज का वेद मन्त्र यागों के सम्बन्ध में वह अपनी विवेचना कर रहा है। वास्तव में तो हम परम्परागतों से ही नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे यहाँ होता रहा है क्योंकि भिन्न-भिन्न प्रकार के हमारे यागों का कर्मकाण्ड अथवा उसके उनकी वृत्तियाँ हैं अथवा उनका जो क्रियाकलाप है वह परम्परागतों से ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में प्रायः नृत्य होता रहा है अथवा गतिशील रहा है। तो हमें विचार-विनिमय करना चाहिए कि हमारे यहाँ नाना प्रकार के यागों का चलन परम्परागतों से ही माना गया है। हमने बहुत पुरातन काल में अपना निर्णय देते हुए कहा था कि हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में अहिंसा और मानवीयता से गुथे हुए क्रियाकलाप का नाम ही याग माना गया है। वह अहिंसा में रतम् ब्रह्मवाचोः वह अहिंसा से गुथा हुआ मानवीयत्व

सदैव निहित रहा है। इसके ऊपर हमारे यहाँ ऋषि-मुनि परम्परागतों से अनुसन्धान करते रहे हैं। इसलिए हमारे यहाँ याग का अपना महत्त्व माना गया है। प्रत्येक क्रियाकलापों में याग का अपना महत्त्व और अपनी मानव विशिष्टता रही है। इसके ऊपर परम्परागतों से ऋषियों ने अपनी साधना के सम्बन्ध में भी याग का चलन माना है और उसको पवित्रता में लाने के लिए सदैव तत्पर रहे हैं।

जितना भी संसार का सुक्रियाकलाप है नित्य प्रति क्रियाओं में आने वाला जो नृत्य है उनमें सर्वत्रता में यागों की वृत्तियाँ मानी हैं और यह कहा है ऋषियों ने कि हम प्रत्येक रूप में याग को स्वीकार करते हैं। क्योंकि यह पालन करने वाला है। हमारे यहाँ जैसे कृष्ण याग का प्रायः वर्णन आता रहता है, रुद्रयाग का वर्णन आता रहता है, वाजपेयी यागों का वर्णन आता रहता है, अग्निष्टोम याग और देवी यागों का भी वर्णन प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में अनेक यागों का वर्णन है जैसे वृष्टि याग है, अति वृष्टि हो रही है उस वृष्टि को शान्त करने के लिए भी हमारे महान् तपस्वियों ने याग को विशेष माना है, उसको अग्रगणीय माना है। वह हमारे यहाँ अग्निष्टोम याग में भिन्न-भिन्न प्रकार के क्रियाकलापों का वर्णन आता रहा है। मुझे भी स्मरण आता रहा है कि यहाँ नाना प्रकार के यागों का जो कर्मकाण्ड है, वह मानवीय धाराओं में और आत्मिकता में निहित रहता है। इसलिए वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है, हे मानव! तू अहिंसा परमोधर्मः अहिंसा गुथा हुआ मानव दर्शन को तू परमपिता परमात्मा के रचाए हुए इस भव्य याग में, भव्य यज्ञशाला में ले चल क्योंकि यज्ञशाला का अभिप्राय यह है कि जहाँ वेदों की ध्वनियाँ होती हैं, जहाँ वेद रूपी प्रकाश मानव के समीप होता हो, मानव तू अग्रगणीय बन करके उस यज्ञशाला में ले चल। तो जब यह पुकार वैदिक साहित्य से होती है तो आचार्यजन इसके ऊपर विचार-विनिमय करते रहते हैं।

यह स्वीकार किया गया है आचार्यों ने विज्ञान के वाङ्मय में जा करके कि नाना-नाना प्रकार की चित्रावलियाँ बन करके, यज्ञशालाओं में यज्ञ यन्त्रों में प्रायः दृष्टिपात आती रहती हैं। जिसका वर्णन हम कई कालों में प्रगट भी कराए हैं। आज भी हमारा मूल वृत्तियाँ होने वाली हैं, जैसा हमारे यहाँ मेरे प्यारे! आदि ऋषियों ने नाना-नाना ऋषियों ने ब्रह्मवाचो प्रवाहः लोकम् ब्रह्माः वयु सर्व ब्रह्म वृणस्ताः। देखो ऋषिवर! साधना में परणित हो रहे हैं और वह अपने वायुमण्डल को पवित्र बनाने के लिए सुगन्धित, पुष्टिकारक और रोगनाशक परमाणुओं को जन्म लेने के लिए वह याग में परणित हो गए हैं और वह यागों के चलन में अपनी वृत्तियाँ ले गए हैं और उन्होंने याग की रचनाएँ की हैं और याग में उन्होंने इतना गम्भीर अध्ययन किया है। जैसे यजमान याग कर रहा है, एक ऋषि ने भी वर्णन किया है उद्दालक गोत्र में, हरितत गोत्र में एक ऋषि हुए हैं जिनका नाम स्वाति व्रेचकेतु कहलाता था। व्रेचकेतु ने एक समय यह विचारा कि मैं याग ब्रह्म में साधना में परणित होना चाहता हूँ। तो साधना के लिए वह अनुष्ठान जब करने के लिए तत्पर हुए, तो उन्होंने याग की रचना की।

उन्होंने यह विचारा कि मैं जब तक अपने बाह्य जगत् में अङ्ग-सङ्ग के आसन को पवित्र वायुमण्डल नहीं बना सकूँगा, मैं अपने यागों में सफलता को प्राप्त नहीं होऊँगा और मेरी साधना भी नहीं बन सकेगी। मैं प्राण और मन की प्रतिभा में जाना चाहता हूँ। मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि जब वह याग करने लगे, तो कहीं से मुनिवरो! देखो महर्षि पुण्डरीक महाराज भ्रमण करते हुए वह अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को कुछ दण्डित करके आश्रम में आ पधारे। व्रेचकेतु मुनि महाराज याग कर रहे थे, और मुनिवरो! पुण्डरीक ऋषि महाराज ने आ करके याग प्रारम्भ उनके साथ में आहुति देना प्रारम्भ किया, तो उनके विचारों में रजोगुण, तमोगुण छाया हुआ था। वह दण्डित करके ब्रह्मचारियों को

विद्यालय से पधारे थे। तो उस समय मुनिवरो! देखो व्रेचकेतु ने कहा कि हे ब्रह्मवेत्ता! हे ब्राह्मणों तुम जो यह मेरे समीप याग करने लगे हो तुम्हारे मन की जो तरङ्गें हैं, वह दूषित हैं और दूषित परमाणुओं को जन्म दे रही हैं। तो मेरे पुत्रो! जब उन्होंने यह कहा तो पुण्डरीक ऋषि ने उन वाक्यों को स्वीकार कर लिया और यह कहा कि प्रभु वास्तव में मेरे हृदय में रजोगुण और तमोगुण छाया हुआ है। मैं विद्यालय से पधार रहा हूँ और ब्रह्मचारियों को विद्यालय में दण्डित करके आ रहा हूँ। मेरे हृदय में जहाँ रजोगुण छाना था वहाँ तमोगुण भी छा गया और तमोगुण, रजोगुण के छाने से मुझे सतोगुण में जाना था, वह मैं नहीं जा सका हूँ। तो मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूँ प्रभु मुझे क्या करना चाहिए? तो मुनिवरो! देखो उन्होंने कहा कि अब तुम स्थली पर विद्यमान हो करके अपने में सतोगुण को लाने का प्रयास करो। न्योदामय से पुनः से **वेद मन्त्रों का अध्ययन करो, उनसे चिन्तन और मनन करो जिससे तुम्हारा हृदय पुनः से पवित्र हो जाए।**

कुछ ऐसा स्मरण है कि वह ऋषि अपनी गन्तव्य स्थली में विद्यमान हो करके जब उन्होंने कई दिवस तक वेदों का गान गाना प्रारम्भ किया, उस गान के गाने से उसके ऊपर मनन और चिन्तन करने से मुनिवरो! देखो उनका हृदय पुनः से पवित्र हो गया और पवित्र हो जाने से उसके पश्चात् उनका अनुष्ठान होना था, उस याग में पुनः से परणित हो गए। याग में आहुति देने लगे, स्वाहा उच्चारण करने लगे। तो विचार यह है कि याग मुनिवरो! देखो साधना का मुख्य एक वृत्तियाँ कहलाती है। इसलिए **हमें अपने विचारों, हृदयों को इतना विशुद्ध बना लेना चाहिए, जिससे याग हमारा देवता बन करके देव पूजा बन करके वह वायुमण्डल को पवित्र बना सके, मानव के हृदयों को पवित्र बना सके।** याग का जो अध्वर्यु है, वह सूर्य माना गया है, वह प्रकाश देने वाला है नाना-नाना प्रकार की किरणों से बेटा! वह नाना-नाना प्रकार की याग की तरङ्गों को अपने में ग्रहण कर लेता है।

आज मैं बेटा! याग के सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए याग करें। **याग होते हैं, यागों में दर्शनों का उपदेश होता है** दर्शनों की प्रतिभा में मानव रत्त हो जाता है। इससे पूर्वकाल में हम तुम्हें प्रगट कर रहे थे, हम माता वसुन्धरा की याचना कर रहे थे। वसुन्धरा में हमारी जननी माता पृथ्वी माता और वही वसुन्धरा को चैतन्य देव जो संसार का अधिपति माना गया है, जो संसार को अपने में धारण कर रहा है, नाना-नाना प्रकार की मालाओं को अपने में अर्पित करके संसार को माला के रूप में दृष्टिपात करा रहा है। जब दार्शनिकजन अपनी आभा में परणित होते हैं तो संसार की माला बना करके अपने कण्ठ में धारण करके उसको आलङ्गित करके अपने में धन्य-धन्य हो जाते हैं।

महर्षि दालभ्य के उद्‌गार

मेरे पुत्रो! देखो वहीं सभा में जाना चाहता हूँ। सभा में मुनिवरो! देखो महर्षि शिखाङ्गकेतु महाराज जो उद्दालक गोत्रीय कहलाते थे। **उद्दालक गोत्रीय ऋषियों के यहाँ प्रातःकालीन याग होना और याग के पश्चात् अपने-अपने मानवीय कल्याण के लिए उपदेश देना** यह परम्परा का एक नृत्य माना गया है। परम्परागतों से ही एक ही स्थली पर नहीं, जब भारद्वाज मुनि के आश्रम में ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे, प्रातःकालीन याग करते थे और यन्त्रों के द्वारा अपने चित्रों का दर्शन करते रहते थे। तो मुनिवरो! देखो वह यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अपना आत्मनीय जो चिन्तन है, आत्मनीय जो विचारधारा है उसे प्रायः वह प्रगट करते रहे हैं। उसका उपदेश मञ्जलियाँ उपदेश होना उस उपदेश को सब श्रवण करके अपनी-अपनी महानता में रत्त रहना है। तो इनके पूर्व काल में ब्रह्मचारी सुकेता का उपदेश हुआ और देखो महर्षि वैशम्पायन के विचार श्रवण किए और इसी विचार में महर्षि प्रह्लाण ने

अपने ब्रह्मवेत्ता होने का अपना विचार व्यक्त किया। उसके पश्चात् मुनिवरो! देखो महर्षि दालभ्य उपस्थित हुए। महर्षि दालभ्य मुनि बोले कि संसार में जैसे यह भौतिक याग चल रहा है जैसे भौतिक याग में मानव परणित हो रहा है, इसी प्रकार मानव को आध्यात्मिकवाद में ही प्रवेश करना चाहिए। आध्यात्मिक चिन्तन करने वाला याज्ञिक यह विचारता है कि प्रकाश कहाँ से प्राप्त होता है। प्रकाश के लिए वह सदैव तत्पर रहता है, अन्धकार को नष्ट करने में तत्पर रहता है और प्रकाश को लाने में प्रयास करता रहता है।

यह जो वेदों के मन्त्र हैं, वेदों की जो ध्वनियाँ हैं जो भिन्न-भिन्न प्रकार से वेदों का जो उद्गीत गाने वाले हैं जैसे जटापाठ, मालापाठ, घनपाठ, ऋदम्पाठ, उदात्त और अनुदात्त में वेदों का गान गाया जाता है। वेद की प्रत्येक मन्त्रों की एक वह मंतरा बना करके और मन्तव्य बनाने के पश्चात् वह ब्रह्मावाचो वह किसी सूत्र में पिरो देता है और वह सूत्रों में परणित हो करके एक माला बन जाती है और उस माला को मुनिवरो! देखो धारण करने लगता है अपने हृदय में, मानव अपने कण्ठ में आलिङ्गन करके अपने को धन्य बन जाता है। उसके पश्चात् वह प्रकाश कहलाता है। वह उनको जो प्रकाश दे, जो मानव के मानवीय प्रकाश में रत्त हो जाता है। जैसे प्रातःकाल से सूर्य उदय होता रहता है, सूर्य उदय हो करके नाना प्रकार की ऊर्जा देता है, प्रकाश देता है, प्रकाश में रत्त हो जाते हैं। सूर्य नेत्रों का देवता बन जाता है, नेत्रों को प्रकाशित करने वाला, नेत्र प्रकाशित हो जाते हैं। इसी प्रकार जो **वेदों का अनुपम प्रकाश है वह मानव के अन्तःकरण को प्रकाशित बना देता है।** जैसे मुनिवरो! सूर्य नेत्रों का प्रकाशक है, उसी प्रकार वेदरूपी जो प्रकाश है, वेदरूपी जो विज्ञान है वह मानव के अन्तःकरण को पवित्र बना देता है। ऋषि ने कहा हमें वेद के एक-एक शब्दों को अपने में चिन्तन में लाते हुए प्रकाश में जाना चाहिए। जैसे सूर्य ऊर्जा को ले

करके नाना यन्त्रों में वैज्ञानिक प्रवेश हो जाते हैं इसी प्रकार जब वेदरूपी सूर्य को, वेदरूपी प्रकाश को अपने अन्तःकरण में दृष्टिपात किया जाता है तो वह प्रकाश मानव का एक द्वितीय रूप को धारण करके मानव को अनुपम बना देता है। वह प्रकाश में रत्त हो करके मुनिवरो! देखो प्रभु के गुणगान गाता रहता है। हिंसक प्राणी उनके समीप नहीं आता, वह अहिंसा में परणित होते हुए अपनी आभा में नियुक्त हो जाते हैं।

चित्त की आभा

मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आज का विचार क्या कह रहा है? हे मानव! तू याज्ञिक बन करके भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन कर, उसमें अहिंसा से गुथा हुआ तेरा चयन रहना चाहिए, तेरे क्रियाकलाप रहने चाहिए क्योंकि वही क्रिया तेरे जन्म जन्मान्तरों के क्या, वह चित्त के मण्डल में निहित हो जाती है और वही चित्त का मण्डल संस्कारों का तारतम्य बन करके, संस्कारों की प्रतिभा बन करके वह चित्त की आभा में निहित हो जाती है। इसलिए तेरा जो क्रियाकलाप है वह विचित्र होना चाहिए, जिससे वह परमाणु तुझे ही प्राप्त होते हुए आज उन परमाणुओं की प्रतिभा में रत्त हो जाए। यह उद्गीत ऋषि-मुनियों की सभा में भिन्न-भिन्न प्रकार का विचार-विनिमय होता रहा है। शब्द विज्ञान, आभामयी विज्ञान अपने में देखो पराद्वितीय रहा है। आज मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, आज मेरे प्यारे महानन्द जी! अपने दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्गार

ओ३म् देवम् भ्रदाः माम् ऋषि वरुणाः।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव याग के सम्बन्ध में अपनी भौतिक विचारधाराएँ प्रगट कर रहे थे। उनके विचारों में याग के प्रति कितने अगाध प्रीति हमें

निहित हो रही है जिसके ऊपर बहुत समय से पूज्यपाद गुरुदेव अपना विचार व्यक्त करते रहते हैं। परन्तु उस याग को मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहीं आध्यात्मिकवाद के ऊपर समन्वय किया है और कहीं आध्यात्मिकवाद को भौतिक में विज्ञान से समन्वय किया है और कहीं आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान को दोनों को व्यवहार में परणित किया है। परन्तु देखो सर्वत्रता में एक याग की प्रतिभा प्रायः हमें दृष्टिपात कराते रहते हैं। परन्तु आज का हमारा यह वाक्य क्या कह रहा है? पूज्यपाद गुरुदेव ने यागों के ऊपर अपनी बहुत गम्भीर मुद्राएँ प्रगट की हैं क्योंकि कई समय हो गया, कई समय क्या प्रत्येक वेद मन्त्र तो एक मनके के रूप में स्वीकार करते रहते हैं और वही मनका देखो सूत्र में पिरोया जाता है, उसी की माला बनती है, और उसी माला को जब ऋषि-मुनि चिन्तन में लाते हैं तो वह अगाध एक ब्रह्माण्ड का स्वरूप धारण कर लेता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी याग के सम्बन्ध में, विचारों के सम्बन्ध में कितनी गम्भीरता में अपना उपदेश दिया है। जब हम विचारों को और मनन करने लगते हैं तो एक और नवीन-नवीन मुद्राएँ हमें प्राप्त होने लगती हैं, उन मुद्राओं में हम प्रवेश करने लगते हैं।

महाभारत काल के पश्चात् याग और माताओं पर आक्रमण

मैं जहाँ पूज्यपाद गुरुदेव का विचार, जहाँ यह हमारी आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक याग सम्पन्न हुआ। याग को सम्पन्न करने के लिए नाना वृत्तियाँ वह सम्भवाः। याग सम्पन्न हुआ है, मैं उस याग को दृष्टिपात करता हुआ, मेरी अन्तरात्मा बड़ी प्रसन्न रहती है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह परिचय कराते हुए कहा है कि इस संसार में महाभारत के काल के पश्चात् दो वस्तुओं पर बड़ा आक्रमण हुआ है। दो धाराओं पर जो संसार की मुख्य धाराएँ हैं जो संसार की रचना के वृत्तियों में रत्त रहती हैं उन पर आक्रमण किया गया। और वह आक्रमण क्या एक मेरी प्यारी माता पे आक्रमण हुआ और एक यागों पर आक्रमण

हुआ। परन्तु पुरातन काल का जो अतीत का काल है उस अतीत के काल में यागों का कितना चलन रहा है। प्रत्येक गृह में यागों का चलन होना, माताओं को आयुर्वेद की विद्याओं का चलन करना, वेदों का अध्ययन करना यह प्रायः देखो महाभारत काल से पूर्व यह क्रियाएँ रही हैं। नित्यप्रति गृहों में यह क्रियाकलाप होता रहा है।

मुझे तो स्मरण आता रहा है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव और हम जब भ्रमण करते हुए किसी स्थली पर जाते, पुरोहितों से वार्त्ता प्रगट करते,, प्रत्येक गृह में एक पुरोहित है वह अपने में वेदों का अध्ययन करके यागों का चलन और यागों की प्रतिभा और मेरी प्यारी माताओं का वेदों का और आयुर्वेद का विशेषकर अध्ययन करना। जिस माता के द्वारा आयुर्वेद होता है आयुर्वेद का अध्ययन होता है वह माता अपने गर्भ से सुशिशु सन्तान को जन्म दे सकती है। वह जन्म देती रहती है परन्तु वह अध्ययन होना चाहिए। इसी प्रकार मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने तो कई काल में प्रगट कराया, परन्तु याग होना चाहिए। आयुर्वेद की दृष्टि से याग और आयुर्वेद एक ही सूत्र के दोनों मनके माने गए हैं। दोनों एक ही सूत्र में पिरोए जाते हैं और वह सूत्र है ज्ञान और वह सूत्र है विवेक, वह सूत्र है व्यवहार, वह सूत्र है मानवीय राष्ट्रीयवाद वह सूत्रों में परणित रहने वाला है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह परिचय देते हुए कहा था कि महाभारतकाल में देखो बुद्धिजीवी प्राणी और विज्ञान सर्वत्रता विनाश हो गया और सर्वत्र अग्नि के मुखार-बिन्दु में वह स्वाति की अग्नि में परणित हो गया।

आज मानव को विचारना है कि स्वार्थवाद की वेदी पर जब राष्ट्रवाद बन जाता है, तो समाज का ह्रास हो जाता है, समाज की प्रतिभा नष्ट हो जाती है। उसी स्वार्थ के कारण रसना की लोलुपता में आ करके मानव यागों पर आक्रमण करता है। जब महाभारत के काल के पश्चात् वाममार्ग का जन्म हुआ, वाममार्ग ने मेरी प्यारी माताओं

को महाभारत काल के पश्चात् उसका उपदेश समाप्त हो गया। उसके पठन-पाठन की प्रतिक्रियाएँ समाप्त हो गई थीं और देखो उसके पश्चात् महाभारत के काल के पश्चात् यागों पर आक्रमण हुआ और यागों में वाममार्ग, जो उनके मार्ग पर गति करने वाले हुए, उन्होंने अभद्र व्यवहार प्रारम्भ किया यागों में और यागों में जहाँ अहिंसा से गुथा हुआ एक क्रियाकलाप था, उस क्रियाकलाप में उन्होंने मांसों की आहुति देना प्रारम्भ कर दिया। विचारा नहीं, चिन्तन नहीं किया, **मनन करने से प्रत्येक वस्तु का ज्ञान होता है।** जब गम्भीर मुद्रा में अपने आत्मीय चिन्तन में अपने विचारों को ले जाता है, तो **आत्मा और मन प्राण यह सब मिल करके मानव को सुपथ दर्शाते रहते हैं।**

हमारे यहाँ पुरातन काल में जब भी शास्त्रार्थ होता, विचारों का विचार-विनिमय होता और उत्तर प्राप्त नहीं होता, तो वह मौन हो जाते और मौन हो करके प्राण और मन को एक सूत्र में पिरो करके, आत्मा के प्रकाश में वह अपनी आभा में रत्त होने के लिए उस वाक्य पर अपना विचार देते रहते और विचार मान्य होता हुआ अकाट्य होता, उसे कोई काट नहीं सकता, वह अकाट्य कहलाता है। इसी प्रकार महाभारतकाल के पश्चात् चिन्तन नहीं करने से यह परिणाम हुआ कि यागों में, वाजपेयी याग में देखो बलि का वर्णन आया। वाजपेयी यागों में बैल की बलि का वर्णन, अश्वमेध याग में अश्व घोड़े को ले करके उसकी बलि का वर्णन आया है और अजामेध में बकरी का वर्णन आया। अग्निष्टोम याग में देखो वह गौ का वर्णन आया। गौमेध यागों में भी गौ का वर्णन आया है। भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में मांस की बलियाँ, पशुओं की बलियाँ प्रदान करना बलि देना यह अभद्र व्यवहार बन गया। यजमान के ऊपर नाना प्रकार का अभद्र व्यवहार होना, यह स्वार्थपरिता है। यह रसना से ऊपर रसना रहित बन करके मानव ने यह अभद्र व्यवहार का प्रारम्भ किया। क्योंकि ज्ञान रहा नहीं, विवेक रहा नहीं, ज्ञान

और देखो विज्ञान नहीं रहा, वह अग्नि के मुखारबिन्दु में चला गया और महाभारत के गृहयुद्ध में, गृह संग्राम में वह समापन हो गया।

अरे! उनमें स्वार्थ नहीं आता तो यह अज्ञान नहीं आना था। इसी अज्ञानता का परिणाम यह बना कि यागों के ऊपर आक्रमण हुआ, अभद्र व्यवहार हुआ और उसका परिणाम यह हुआ कि देखो उसके पूर्व महाभारत के काल से पूर्व राजा अपने में स्वयँ कृषि का उद्गम करता था, उसके द्वारा अपने उदर की पूर्ति करता था। उसी अन्न में से कोई ऋषि-मुनि अतिथि आता, तो उसकी प्रायः सेवा होती रहती थी। परन्तु देखो महाभारतकाल के पश्चात् वह परिपाटी, वह परम्परा समापन हो गई। वेद का प्रकाश लुप्त होने लगा और वह वेद को न विचार करके, उनके लुप्त होने का कारण बना। परन्तु देखो उसके कारण ऐसा मुझे स्मरण है, मैंने ऐसा दृष्टिपात किया है, पूज्यपाद! कि नाना प्रकार के यागों में बलियाँ प्रारम्भ की गईं। महाराजा जन्मेजय ने सर्पयज्ञ किया था, यह सर्वत्रयाग कहलाता था, जिसमें अहिंसा से गुथा हुआ याग था। परन्तु देखो अशुद्धवादियों ने उसको भी सर्पयाग में परणित कर दिया था। वह सर्वत्र याग था सर्वस्व राजाओं की अनुमति से याग हुआ और उस याग को भी आधुनिक काल में महाभारतकाल देखो जन्मेजय के काल के पश्चात् उसको भी सर्पयाग में इसी मन्त्रों के द्वारा सर्प आते और वह अग्नि में भस्म होने लगे, ऐसा वर्णन करते हैं यह अभद्र विचार है, यह अभद्रता का अभद्र वर्णन है। अव्रतम् यह वर्णीय नहीं है, इसको ताण्डवीय दे देनी चाहिए।

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह परिचय कराने जा रहा हूँ, हे प्रभु! अतीत का काल और देखो इस महाभारत का काल अमृतं ब्रह्मः यह दोनों भिन्न-भिन्न क्रियाकलापों में माने गए। उसके पश्चात् यहाँ नास्तिकता का मत आ गया, इस समाज में एक नास्तिकतावाद छा गया। नास्तिकतावाद यह इन्हीं वाममार्गियों के विपक्ष में नास्तिकवाद

का चलन हुआ और उन्होंने यागों के ऊपर आक्रमण किया। आधुनिक काल में भी कहीं-कहीं पर्वतीय क्षेत्रों में वाममार्ग की प्रतिभा मुझे निहित होती रहती थी। मैं आज देखो जिस भी समुद्रों के तटों पर विराजमान होता हूँ, भ्रमण करता हूँ, तो मुझे वहाँ भी अभद्रता प्रतीत होने लगती है। आधुनिक काल में भी परन्तु यहाँ समय-समय पर याग के पालक आते रहे हैं। याग के ऊपर आक्रमण भी होता है, क्रियाकलाप भी होता है, तो ब्राह्मण समाज में जो वाममार्ग में थे, उन्होंने दो प्रकार की वेदियों का निर्माण किया। एक यज्ञशाला के रूप में जिसको यज्ञ वेदी कहा जाता है जिसमें अग्निहोत्र होता है, एक वह जो अहिंसा परमोधर्मः से मानव सिद्धान्त और तर्कयामिनी से गूँथ करके उन्होंने एक दूसरी वेदी का निर्माण किया। वह वेदी इसलिए कि अहिंसा परमोधर्मः है और उसमें हिंसा का नृत्य होने वाला है। अग्निहोत्र में अग्नि प्रदीप्त करके तो आहुति दी जाती है, वह तो हिंसक मानी गई हैं और देखो वह हिंसक हैं और जो एक वेदी भिन्न बनाई है इसमें देवताओं का तर्पयामी करते हैं। समर्पयामी कहते हैं उसमें वह अहिंसा परमोधर्मः धर्मवादी है। तो मेरे विचार में यह नहीं आया कि दो वेदियों का निर्माण क्या हुआ है? तो मुझे कुछ चिन्तन करने से यह प्रतीत हुआ, दृष्टिपात करने से यह प्रतीत हुआ कि कुछ ब्राह्मण ऐसे उनमें से थे जो अहिंसा परमोधर्मः भी चाहते थे। दो प्रकार की वेदियों का इसलिए निर्माण हुआ एक अहिंसा में और एक हिंसा में।

जब देवपूजा एक ही यज्ञ अग्नि ही देवताओं का मुख कहा जाता है तो उस वेदी का कोई अर्थ नहीं माना जाता है, ऐसा मुझे प्रतीत, ऐसा मैंने अपने देखो कई महापण्डितों से विचार किया। वेद के मन्त्रों से भी चिन्तन किया, तो मुझे उसमें और महानता प्रतीत हुई जब देवपूजा और अग्नि के मुख को देवताओं का मुख कहा जाता है। वास्तव में देवपूजा वह है तो इसके विपरीत जो क्रियाकलाप कर रहा है वह किसी न किसी

रूप में अपने विचारों को सार्थक बनाने के लिए कर रहा है। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! महाभारतकाल के पश्चात् यागों पर और मेरी पुत्रियों पर आक्रमण हुआ है। मेरी पुत्रियों और यागों पर आक्रमण करने से, उसका परिणाम यह बना कि आज का जो समाज है, महाभारतकाल में जब यागों का चलन पश्चात् में प्रारम्भ हुआ, तो कुछ ही मानव जो मांस का भक्षण करता था, उससे पूर्वकाल में वह समाज का प्राणी अहिंसा परमोधर्मः ही अपना पालन कर रहा था, अहिंसा परमोधर्मः में निहित रहने वाला था। परन्तु देखो महाभारतकाल के पश्चात् कुछ मांसाहारी प्राणी हुए और आज जब मैं देखो वर्तमान के काल को दृष्टिपात करता हूँ तो सौ में से पाँच प्राणी ऐसे हैं जो अहिंसा परमोधर्मः का पालन करते हैं। अन्यथा अपने उदर को उन्होंने देखो मुख काला बनाया है वह मुख मूल क्षेत्र बना लिया है जहाँ श्मशान भूमि कहलाती है।

आज जब मैं विचारता रहता हूँ, हे मानव! तू अपने उदर को श्मशान भूमि क्यों बना रहा है? तो उसका उत्तर तुझे कुछ और ही प्राप्त होता है। वह वास्तव में जब उत्पत्ति बन जाता है परन्तु विचार क्या, कि यहाँ नाना प्रकार के रूढ़िवाद उत्पन्न हुए और उसी के कारण यागों पर, मेरी पुत्रियों! पर आक्रमण हुआ, तो नाना प्रकार के सम्प्रदायों में यह समाज परणित हो गया, नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन गई। परन्तु देखो संसार में, पृथ्वी मण्डल पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन गईं, कोई यहूदी बन गया, कोई मुहम्मद के मानने वाला बन गया, कोई और भी नाना प्रकार के सम्प्रदाय बन करके देखो वह मांसों का भक्षण करने लगे और वह कहते हैं कि हम अपने में सक्रीय हैं। परन्तु मेरे विचार में यह नहीं आता, मैं तो यह स्वीकार करता हूँ, यदि मुहम्मद नहीं होता, तो अज्ञान नहीं आ सकता था। जो याग और माताओं पर आक्रमण नहीं होता तो सम्प्रदायों का जन्म नहीं हो सकता था। यह जन्म इसी के कारण आया है, इसमें दो ही मूल ऐसे हैं—कोई यागों पर आक्रमण

किया हुआ मानते हैं कि आहुति देना और मांसों में देखो कुछ अहिंसा परमोधर्मः में याग को याग स्वीकार नहीं किया। परन्तु इसी प्रकार अग्रगणीय चल करके देखो जहाँ तक ब्रह्मावाचाः अब यागों को एक पाखण्ड के रूप में भी कुछ प्राणी प्रगट करते हैं। परन्तु यह तो दोनों प्रकार के प्राणी परम्परागतों से रहे हैं।

आधुनिक काल

आधुनिक काल का जो मैं वर्तमान के काल की चर्चा कर रहा हूँ विज्ञानवेत्ता हैं वह मानव समाज को त्रास दे करके समाज की प्रतिभा को नष्ट कर रहे हैं। परन्तु देखो शिक्षालय अपने में शिक्षालय नहीं रहे, जहाँ गुरु शिष्य की प्रणालियाँ समाप्त होती जा रही है। इसके मूल में क्या है आहार व्यवहार में राजा है। हे राजन्! आज तेरे राष्ट्र में रक्तभरी क्रान्ति आ रही है। उस रक्तभरी क्रान्ति का परिणाम यह है कि जो राजा अहिंसा परमोधर्मः का पालन नहीं करता है, जो राजा प्रातःकाल अपने आसन को जब त्यागता है जब वह नाना प्राणियों को जल से तपा करके, जल में तपायमान करके उसका रस बना करके पान कर देता है। अरे राजन्! तेरे राष्ट्र की राष्ट्रीयता नष्ट हो रही है। कहाँ वह राजा जो राम का राज्य हम कहते हैं राम की प्रतिभा का वर्णन करते हैं, जो प्रातःकालीन अपने आसन को त्याग करके बिना याग के वह अन्न का जलपान भी नहीं करते थे। एक वह राजा हैं जो सोऽहम्, जो अपने कृषि उद्यम करके अन्न को पान करते, आज का राजा वो है जो दूसरे के वैभव को संग्रह करके अपने उदर की पूर्ति में लगा हुआ है। तो राम राज्य की कल्पना करना मेरे लिए असम्भव प्रतीत होता है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! आपसे आधुनिक काल का मैं परिचय करा रहा हूँ। और वह परिचय क्या है सम्भवं ब्रह्म लोकाम् यह जो इसी प्रकार विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा है और विज्ञान के दुरुपयोग में मानव के जीवन का भी दुरुपयोग है, चरित्र का ह्रास हो रहा है। मूल में विज्ञान

का दुरुपयोग कहलाता है। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ मैं कहाँ तक इन वाक्यों पर टिप्पणी करता रहूँगा।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! जहाँ यह हमारी वाणी जा रही है वहाँ एक याग सम्पन्न हुआ है। मेरा तो हृदय सदैव यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरा सौभाग्य अखण्ड बना रहे। जो यजमान अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग करता है, देवताओं को हुत कर रहा है, अपने हृदय में श्रद्धामयी घृत को प्रदान करके वायुमण्डल में प्रवेश कर रहा है। आलवृहे हे यजमान! तेरे जीवन को सौभाग्य अखण्ड बना रहे मेरा अन्तरात्मा सदैव यजमान के साथ रहता है। मेरा हृदय यह कहता रहता है कि द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। हे यजमान! तेरे गृह में देखो यह द्रव्य का सदुपयोग हो रहा है। मेरा अन्तरात्मा इसलिए प्रसन्न है कि वायुमण्डल में तेरी विचारधारा द्यौ-लोक को प्राप्त होती रहती है। जब तू शुद्धिकरण कर लेता है, अपनी आभाओं में निहित हो जाता है।

राष्ट्र निराकरण का सूत्र

आज का विचार मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह परिचय, आधुनिक काल का जो राजा है वह अपने राष्ट्र में निराकरण करना नहीं चाहता है। यदि निराकरण करना चाहता है, तो निराकरण हो सकता है। नाना प्रकार के जो यह रूढ़िवादी हैं, हे राजन्! यदि तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो तेरे राष्ट्र में रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए। यदि धर्म और परमात्मा के नाम पर रूढ़ि रहेंगी तो यह समाज कुछ काल के पश्चात् वह समय दूरी नही है जब प्रत्येक स्थलियों पर देखो रक्तभरी क्रान्ति का संचार होने वाला है। परन्तु देखो राजा को चाहिए, प्रजा को चाहिए कि राजा और प्रजा मिल करके राष्ट्र का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए। विचारों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए, विचारों में एक निराकरण होना चाहिए। मैंने निराकरण की चर्चा तो कई काल में प्रगट

की हैं। यहाँ कोई गुरुनानक के मानने वाला है, कोई ईसा के मानने वाला है, कोई मुहम्मद के मानने वाला है और भी नाना प्रकार की सम्प्रदायों, नाना प्रकार की रूढ़ियों में यह समाज और राष्ट्र अपने में घृणित हो रहा है। जब मैं यह विचारता हूँ इसका निराकरण राजा को करना चाहिए तो राजा का निराकरण क्या है कि प्रत्येक रूढ़िवाद के आचार्यों को एकत्रित करें, उनकी सभा हों और सभाओं में अपने-अपने विचार व्यक्त किए जाएँ और जिस विचारधारा का विज्ञान और मानवीय दर्शन एक सूत्र में आ जाएँ, उसी मानवीयता को अपना करके वही उसका धर्म है। वही उसकी मानवता अपना करके राजा को ब्रह्मज्ञानी होना चाहिए और ब्रह्मवेत्ता बन करे वह अपने राष्ट्र में शुद्धिकरण कर सकता है। इसका निराकरण यह नहीं है स्वार्थवाद से राष्ट्र को नहीं आँका जा सकता, स्वार्थवाद से जो राष्ट्र को अङ्कित करता है। मैं धिराज बना रहूँ मेरे से राष्ट्र चले न चले, मैं इसको शुद्धिकरण कर सकता हूँ या नहीं कर सकता हूँ, वह अपने मस्तिष्क में एक पाप, पापाचार्य कर रहा है। और वह पापाचार्य क्या वह इस लोक से जाएगा तो गहन अन्धकार में परणित हो करके जहाँ प्रकाश नहीं प्राप्त हो सकता।

हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! आज का विचार, मैं इसका परिचय इसलिए दे रहा हूँ कि महाभारत के काल के पश्चात् दो वस्तुओं पर, दो धाराओं पर, दो प्राणों पर जब आक्रमण हुआ तो उसकी आत्मा का परिणाम यह कि आज का मानव देखो जहाँ असात्विक आहार पान किया जाता, वहाँ अहिंसा हिंसा में परणित होने वाला अपने में गौरव स्वीकार कर रहा है। यहाँ दूसरे के गर्भ से, अश्वमेध यागों में हिंसा कहते हैं। अश्व नाम राजा का है, और मेध नाम प्रजा का है, वैदिक साहित्य के आधार पर जब दोनों मिल करके राष्ट्र के कल्याण के लिए याग करते हैं तो वह अश्वमेध याग कहलाता है। अजा कहते हैं अपने में विजय करना, अपने राष्ट्र पर विजय करना राजा जब अजामेध याग करता है, अजा कहते हैं अपनी

इन्द्रियों से संयम को और प्रजा पर संयम सात्विकता को ले करके अजामेध याग किया जाता है। अग्निष्टोम याग मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी प्रगट कराया। **मेरे पूज्यपाद गुरुदेव एक सौ इकसठ यागों के कर्मकाण्ड में सदैव निहित रहे हैं। उनके कर्मकाण्डों को जानते रहे हैं और मन्थन करते रहे हैं।** उनका भिन्न-भिन्न प्रकार का कर्मकाण्ड कहलाता है। परन्तु देखो इस प्रकार हमारे यहाँ एक सामूहिक यागों का हुत हुआ, मेरा अन्तरात्मा बहुत प्रसन्न है।

उपसंहार

आज का विचार क्या? मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने यह परिचय दिया है कि वह परिचय क्या जो ह्रास हो रहा है आज मेरी प्यारी माता! शृङ्गार में परणित हो रही है। वहीं माता के गर्भस्थल से असंस्कार वाला पुत्र जब जन्म ले लेता है और देखो वही माता के शृङ्गार को हनन करने वाला बनता है। इस प्रकार हे माता! तुझे अपने में राम को जन्म देना है, तो तुझे कौशल्या बनना हे, यदि कृष्ण को जन्म देना है तो यहाँ तुझे अपनी आभा में माता यशोदा और मातागृह बनना है, जिससे तुम्हारा गर्भाशय पवित्र बन जाए। तो पूज्यपाद गुरुदेव ने तो बहुत वाक्य प्रगट किए हैं। आज मैं केवल उनके विचारों पर टिप्पणी देना ऐसा स्वीकार करता हूँ जैसे सूर्य और जुगनू का एक दोनों का प्रसङ्ग रहता है। आज का विचार-विनिमय क्या? आज हम अपने निराकरण करने वाले बनें, राजा को चाहिए कि राष्ट्र का निराकरण दर्शनों से निराकरण हो सकता है और देखो स्वार्थ से निराकरण नहीं हो सकता है। आज का विचार यह समाप्त, अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपना विचार दिया। इनके विचारों में बड़ी गम्भीरता और दार्शनिकता की मुझे प्रतीत

हो रही थी। परन्तु आज का इनका विचार बड़ा भव्य और विचारों में एक महान् राष्ट्रीयकरण, मानवीयकरण यागों के आक्रमण मेरी प्यारी माताओं की प्रायः ऐसा हुआ है और ऐसा अशुद्ध जगत् बन गया है यह तो बड़ी अशोभनीय समाज की रचना है। रचना सुशोभनीय रूपों में होनी चाहिए जैसा मेरे पुत्र! महानन्द जी ने अभी-अभी प्रगट किया है कि राजा और प्रजा दोनों मिलन करके अश्वमेध याग करते रहें और समाज का शुद्धिकरण होना चाहिए। अहिंसा में मानव को परणित रहना चाहिए, हिंसा को त्याग देना चाहिए। **हिंसा मानव के शरीर को भ्रष्ट करती है और अहिंसा परमोधर्मः मानव के जीवन में उल्लास और पवित्रता लाए।** यह आज का विचार अब समाप्त होने जा रहा है। अब वेदों का पठन-पाठन।

वेद पाठ .....

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्! आज्ञा।
पूज्यपाद गुरुदेव–ओ३म् शान्तिः।

दिनाँक : 11 अप्रैल, 1986
समय : प्रातः 10 बजे
स्थान : श्री मोहन सिंह सूद
शिवपुरी, म.प्र.

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. संसार की जितनी विद्याएँ हैं वह सब वेद में बीज अँकुर रूप से विराजमान हैं।
2. प्रत्येक वेद मन्त्र में परमात्मा का ज्ञान-विज्ञान है। जिसको जानने के लिए आत्मा के बल को ऊँचा बनाना अनिवार्य है।
3. विवेक अपने कर्त्तव्य के पालन करने से आएगा।
4. मानव का वास्तविक भूषण विवेक है जब माता व पुत्र दोनों विवेकी बनेंगे तो यह गृहस्थ क्यों न स्वर्ग बनेगा।
5. जिस राजा के राष्ट्र में ऊँचे विचारों वाली प्रजा होती है उस राजा को शिव कहते हैं।
6. युवा होने के पश्चात् माता-पिता की सेवा करना पुत्र का कर्त्तव्य है।
7. जब मानव ऊँची क्रीड़ा करता है तो उस समय संसार पवित्र बनता है।
8. जिस गृह में पत्नी और पति में, माता-पिता और पुत्र में विरोध होता है वह गृह नर्कपुरी कहलाता है।
9. हमारे आचार्यों ने विवेक को अगस्त्य कहा है।
10. टटीरी नाम आत्मा का है और आत्मा के मन और बुद्धि दो पुत्र हैं और यह संसार रूपी सागर है।
11. विवेक ही मानवता लाता है जब विवेकी भावनाएँ होती हैं तो संसार पवित्र होता है।
12. विवेक मानव के द्वारा उसी काल में आता है जब मानव परमात्मा का आस्तिक बनें।
13. हमें संसार में विवेकी बनना है।
14. यदि सब अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते चले जाएँगे तो यह संसार स्वर्ग बन जाएगा।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

वैदिक कुमार

श्रीमति पूनम त्यागी व श्री संजीव त्यागी जी निवास स्थान बल्लभगढ़, हरियाणा (मूल निवासी ग्राम दिनकरपुर, जिला मुजफ्फरनगर) ने अपने सुपुत्र चिरन्जीव वैदिक कुमार के शुभ जन्मदिवस 8 मई 2019 के आगमन पर 5101/- रु. का सात्त्विक सहयोग प्रतिवर्ष की भाँति उदारता से प्रदान किया है। जिससे कि ऋषि मुनियों के क्रियाकलाप को ऊर्ध्वा गति प्रदान करते हुए प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में उनके आशीर्वाद की छत्र-छाया भी निरन्तर स्मरण रूप में बनी रहे। श्री त्यागी जी समिति के प्रकाशन के कार्य में काफी लम्बे समय से सहयोग निरन्तर बनाये हुए हैं और प्रतिमाह एक हजार की राशि 'मासिक सहयोग' के रूप में प्रकाशन के लिए प्रदान कर रहे हैं। जिसके लिए समिति हृदय से बारम्बार आभार प्रकट करती है।

अपने माता-पिता जी की छत्रछाया से ही श्री त्यागी जी पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के ज्ञान से जुड़ गये थे क्योंकि इस याज्ञिक परिवार ने पूज्यपाद गुरुदेव की अनुपम कृपा का शुभ लाभ उनके द्वारा यज्ञों व प्रवचनों के माध्यम से अनेक बार उठाने का सौभाग्य प्राप्त किया। उसी धारा को निरन्तर जागृत रखते हुए अपने सेवाकाल को भी बड़ी निष्ठा व कर्मठता से करते हुए लाक्षागृह बरनावा में आयोजित यज्ञों में अनेक बार पति-पत्नि यजमान बनकर और साहित्य का निरन्तर अध्ययन करते हुए अपने को परिवार सहित ऊर्ध्वा गति प्रदान करने में संलग्न हैं। समिति त्यागी जी के सौभाग्यशाली पुत्र प्रिय वैदिक कुमार को जन्मदिवस की शुभकामनायें प्रदान करते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है और समस्त परिवार का पुनः से आभार प्रकट करते हुए सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी उन्नति के लिये भी ईश्वर से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

स्वास्तिक त्यागी

श्रीमति ऊषा त्यागी धर्मपत्नी श्री देवदत्त त्यागी जी निवासी ग्राम सोहञ्जनी तगान जिला मुजफ्फर नगर ने अत्यन्त उदारता एवम् आत्मविभोरता से अपने प्रिय सुपौत्र स्वास्तिक त्यागी सुपुत्र सौभाग्यवती पारूल त्यागी धर्मपत्नी श्री अनुराग त्यागी के जन्म-दिवस के पावन वेला दिनाँक 16 मई 2019 के शुभागमन पर 2101/- रु. का सात्त्विक अनुदान पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के श्रीचरण कमलों में साहित्य को प्रकाशित कराने के रूप में अर्पित किया है।

श्रीत्यागी जी पूज्यपाद गुरुदेव के साहित्य का अध्ययन प्रारम्भ से ही करते हुए इनके क्रियाकलापों से भी अत्यन्त निकटता से संलग्न हैं। अपने जीवन में ऊर्ध्वागति बनाए रखने में ग्रामवासियों के साथ अपने ग्राम के मन्दिर के रूप को स्वरूप देने के साथ-साथ उसमें प्रतिवर्ष वेदों का याग आयोजित कराने में अग्रगणीय बने हुए हैं। अपने कृषि के कार्य को सकुशल करते हुए आध्यात्मिक जीवन के साथ-साथ अपनी सुपुत्री व दोनों सुपुत्रों को उत्तम शिक्षा ग्रहण कराकर योग्य बनाने में दोनों पति-पत्नी ने अपने तप का एक आदर्श समाज के समक्ष प्रेरणा रूप में प्रस्तुत किया है। अपने समस्त भाईयों के परिवार के साथ-साथ भी आनन्द से अपने जीवन को व्यतीत करने में प्रतिदिन गतिवान है।

ऐसे परिश्रमी व श्रद्धालु परिवार के सहयोग का समिति हृदय से आभार प्रगट करती है और सुपौत्र स्वास्तिक को जन्म-दिवस की शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए समस्त परिवार को सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी उन्नति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क दिनाँक 1 जनवरी 2019 से 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. होगा, जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   ए-59, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जाए। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत करा दिया जाए।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	30.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	45.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, ए-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली – स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	600 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर उर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

ब्रह्म की चेतना ही सँसार में अपना कार्य कर रही है। ब्रह्मविद्या ही मानव को ऊँचा बनाती है, और राष्ट्र में धर्म को ला देती है। इसलिए आज हमें ब्रह्मविद्या की आवश्यकता है। जब प्रत्येक मानव धर्मनिष्ठ और ब्रह्मनिष्ठ होता है तो उसी काल में उसकी विचारधारा में एक महानता का दिग्दर्शन और उसके हृदय में महानता की प्रतिष्ठा हो जाती है। जिससे वह महान् कहलाता है। मानव की जो वाणी होती है उसका सम्बन्ध अग्नि से होता है। इसलिए हमारे यहाँ किसी-किसी ऋषि ने अग्नि को भी उद्‌गाता कहा है। आज जो हम प्रभु की याचना कर रहे हैं। हे प्रभु! तू स्वयं यज्ञ है। तेरी महानता इन वेदों में परिणत हो रही है। वेद की जो अनुपम धारा है वही प्रकाश, मानव के अन्तःकरण को पवित्र बनाता है। क्योंकि वेद की जो अनुपमता है, ब्रह्मविद्या है, महानता है, उसमें उसका एक-एक शब्द पक्षपात से रहित है। उसी को तो ब्रह्मविद्या कहते हैं। क्योंकि परमात्मा में रूढ़ि नहीं होती, इसलिए वेद में भी रूढ़ि नहीं है। इसलिए वेद के अनुसार मानव को अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहिए। जो मानव रूढ़ियों में परणित हो जाते हैं, उनके जीवन में विनाश हो जाता है। उनका जो मानसिक सँकल्प होता है, उसकी धाराओं में भिन्नता आ जाती है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 47 : अंक : 560
मई 2019

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-05-2019
Published on 5th day of the same month